



Lakshay Garg

13 Nov 1997

05:10 PM

Hodal

Model: All-Remedies-Report

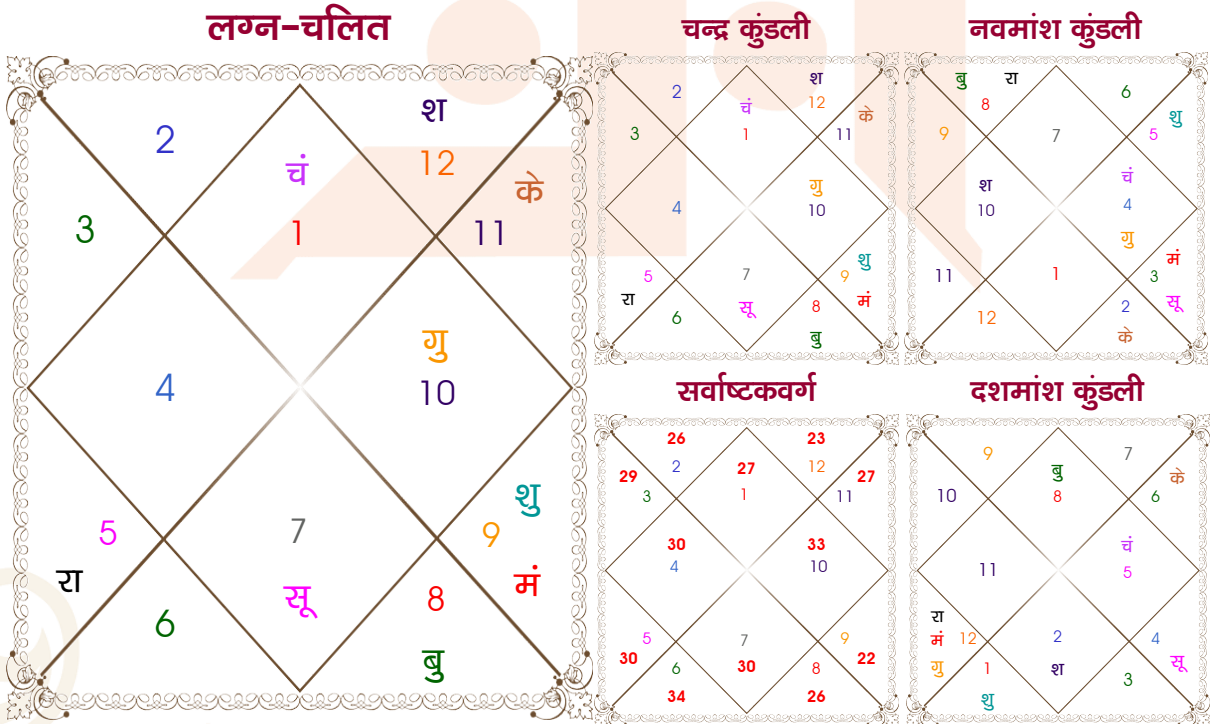
Order No: 119699901

तिथि 13/11/1997 समय 17:10:00 वार गुरुवार स्थान Hodal चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:32
अक्षांश 27:52:00 उत्तर रेखांश 77:22:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:20:32 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 20:19:59 घं	गण : देव
वेलान्तर : 00:15:45 घं	योनि : अश्व
सूर्योदय : 06:40:27 घं	नाडी : आद्य
सूर्यास्त : 17:29:06 घं	वर्ण : क्षत्रिय
चैत्रादि संवत : 2054	वश्य : चतुष्पाद
शक संवत : 1919	वर्ग : मृग
मास : कार्तिक	चुंजा : पूर्व
पक्ष : शुक्ल	हंसक : अग्नि
तिथि : 14	जन्म नामाक्षर : ला-लाखन
नक्षत्र : अश्विनी	पाया(रा.-न.) : स्वर्ण-स्वर्ण
योग : व्यतिपात	होरा : शुक्र
करण : वणिज	चौघड़िया : शुभ

विंशोत्तरी	योगिनी
केतु 0वर्ष 6मा 23दि	भामरी 0वर्ष 3मा 26दि
चन्द्र	पिंगला
07/06/2024	11/03/2025
08/06/2034	12/03/2027
चन्द्र 08/04/2025	पिंगला 21/04/2025
मंगल 07/11/2025	धान्या 20/06/2025
राहु 09/05/2027	भामरी 10/09/2025
गुरु 07/09/2028	भद्रिका 20/12/2025
शनि 08/04/2030	उल्का 21/04/2026
बुध 07/09/2031	सिद्धा 10/09/2026
केतु 07/04/2032	संकटा 19/02/2027
शुक्र 07/12/2033	मंगला 12/03/2027
सूर्य 08/06/2034	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			22:49:32	मेष	भरणी	3	शुक्र	शनि	---	0:00			
सूर्य			27:18:18	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	नीच राशि	1.18	आत्मा	पितृ	वध
चंद्र			12:15:21	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	सम राशि	1.22	ज्ञाति	मातृ	जन्म
मंगल			09:22:51	धनु	मूल	3	केतु	शनि	मित्र राशि	1.16	कलत्र	भ्रातृ	जन्म
बुध			14:34:24	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	सम राशि	1.00	मातृ	ज्ञाति	मित्र
गुरु			20:22:27	मकर	श्रवण	4	चंद्र	केतु	नीच राशि	1.30	भ्रातृ	धन	क्षेम
शुक्र			14:07:54	धनु	पूर्वाषाढा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.14	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		20:39:21	मीन	रेवती	2	बुध	शुक्र	सम राशि	1.11	अमात्य	आयु	अतिमित्र
राहु	व		23:56:14	सिंह	पूर्वाल्गुनी	4	शुक्र	शनि	शत्रु राशि	---	ज्ञान		सम्पत
केतु	व		23:56:14	कुंभ	पूर्वाभाद्रपद	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	---	मोक्ष		वध



Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/11/1997-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-20/10/2027 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	-----	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया

फल

अशुभ
अशुभ
शुभ
अशुभ
अशुभ

क्षेत्र

कम खर्च
बुरा स्वास्थ्य
धन
सुख हानि
दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति नवम भाव में स्थित है। यह भाव भाग्य एवं धर्म का प्रतिनिधि भाव है। अतः इसके प्रभाव से आप भाग्य पर अल्प मात्रा में ही विश्वास करेंगे तथा कर्म पर विशेष ध्यान देंगे। आपके विचार से कर्म के बिना भाग्य का उदय नहीं होता अतः अपने इस सिद्धांत से आप जीवन में कर्म के द्वारा उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहेंगे। साथ ही धर्म के प्रति आपकी रुचि अल्प मात्रा में रहेगी तथा धार्मिक कार्य कलापों एवं तीर्थ स्थानों की यात्रा आदि को भी कम ही करेंगे। आयु के साथ साथ आप जीवन में इनके महत्व को भी अवश्य स्वीकार करेंगे। आपको समाज में विशिष्ट सम्मान भी प्राप्त होगा लेकिन इसमें विलम्ब हो सकता है। आप एक पराक्रमी एवं उत्साही व्यक्ति हैं अतः आपको इस ओर से कोई चिन्ता नहीं होगी।

नवम भाव से द्वादश भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक रहेगा साथ ही शुभाशुभ कार्यों पर आप व्यय करेंगे। जमीन जायदाद पर अधिक से अधिक व्यय करने के इच्छुक रहेंगे इससे आपको प्रचुर मात्रा में लाभ की प्राप्ति हो सकती है। यद्यपि इसके प्रभाव से जीवन में अनावश्यक विघ्न बाधाएं भी आएंगी परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही दाम्पत्य जीवन का आप सुख पूर्वक उपभोग करेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपके पराक्रम से प्रभावित रहेंगे जिससे आपको इच्छित मान सम्मान की प्राप्ति होगी। साथ ही भाई बहनों का भी न्यूनाधिक सहयोग मिलता रहेगा। चतुर्थ भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से आप जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से युक्त रहेंगे तथा सुख पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सांसारिक सुख संसाधनों की भी आपको परिश्रम पूर्वक प्राप्ति होगी परन्तु माता का सुख एवं स्वास्थ्य मध्यम रहेगा।

इस प्रकार मंगल के इस प्रभाव से आप कर्म योगी रहेंगे तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके भाग्योदय करेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा पारिवारिक जन भी आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। आप भी उचित रूप से उनका लालन पालन करेंगे। साथ ही आपसी संबंधों में मधुरता भी बनी रहेगी।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

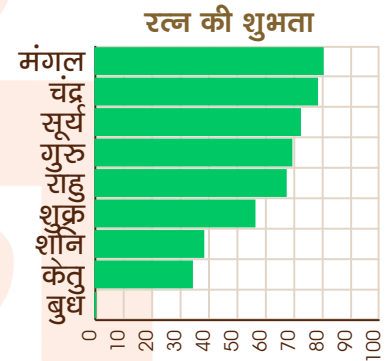
आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	80%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
मोती	चंद्र	78%	स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	72%	दम्पति, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	69%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
गोमेद	राहु	67%	सन्तति सुख, दम्पति
हीरा	शुक्र	56%	भाग्योदय, धन, दम्पति
नीलम	शनि	38%	व्यय, व्यावसायिक हानि, हानि
लहसुनिया	केतु	34%	हानि, व्यय
पन्ना	बुध	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	08/06/1998	59%	66%	86%	0%	69%	62%	12%	55%	55%
शुक्र	08/06/2018	59%	66%	80%	0%	69%	69%	50%	73%	47%
सूर्य	07/06/2024	84%	84%	86%	0%	75%	38%	12%	55%	9%
चंद्र	08/06/2034	78%	91%	80%	0%	69%	56%	38%	55%	9%
मंगल	08/06/2041	78%	84%	92%	0%	75%	56%	38%	55%	47%
राहु	08/06/2059	59%	66%	67%	0%	69%	62%	50%	80%	9%
गुरु	08/06/2075	78%	84%	86%	0%	81%	38%	38%	67%	34%
शनि	08/06/2094	59%	66%	67%	0%	69%	62%	56%	73%	9%
बुध	09/06/2111	78%	66%	80%	6%	69%	62%	38%	67%	34%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व मोती रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मोती आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए माणिक्य, पुखराज, गोमेद एवं हीरा रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

नीलम व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

पन्ना पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। इस रत्न का आप सर्वदा त्याग ही करें, क्योंकि किसी भी दशा या गोचर में इससे शुभ फल प्राप्त होने की आशा कम ही है। इस रत्न को धारण करने से सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल ग्रह की शुभता प्राप्त करें। मूंगा रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति बढ़ाकर आपको उच्चाधिकारी बनाएगा। मूंगा रत्न से आप स्वाभिमानी बनेंगे। मूंगा रत्न आपको मित्रों में श्रेष्ठ बनाएगा। रत्न शुभता विदेशी यात्राओं को सफल कर आपको लाभ दिलाएगी। रत्न शक्तियां आपको आत्मिक रूप से धार्मिक बनाए रखेंगी। यह रत्न आपके पुरुषार्थ भाव को बढ़ाकर आपको साहसपूर्ण कार्य करने की ओर प्रेरित करेगा। मूंगा रत्न धारण से भूमि-भवन के कार्य भी पूरे होंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्यपि अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्टमेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते हैं। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा प्रथम भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। चंद्र रत्न मोती धारण करने से आपके अपनी माता से संबंध मजबूत होंगे। मोती रत्न आपको मानसिक शांति देगा। इसके अलावा मोती रत्न आपको व्यवसायिक विवेकशीलता देकर आपके धन प्रवाह को अनुकूल बनाये रखेगा। सप्तम भाव में स्थित तुला राशि पर चन्द्र की दृष्टि होने के कारण आपका जीवनसाथी गुणवान, कला प्रेमी और कलाप्रेमी होगा। साथ ही यह मोती रत्न आपके वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोग करेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र लग्नेश मंगल का मित्र है। चंद्र रत्न मोती की शुभता आपको सौम्य सरल स्वभाव, स्वाभिमानी, आत्मसम्मान, महत्वाकांक्षा का गुण दे सकती है। इसके अतिरिक्त मोती आपको धन, प्रतिष्ठा, यात्रा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन प्राप्त, कल्पना और प्रगतिशील विचारधारा भी प्रदान कर रहा है। चतुर्थेश का रत्न होने के कारण चंद्र रत्न मोती आपको माता सुख, कर्तव्यनिष्ठा, वाहन, जमीन-जायदाद से सुखी कर सकता है। इसलिए चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूठी में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। यह रत्न धारण करने से आपके स्वाभिमान भाव में वृद्धि होगी। आपकी कठोरता में कमी होगी। माणिक्य रत्न आपको स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकता है। सूर्य रत्न धारण करने से आपके वैवाहिक जीवन में सामंजस्य स्थापित होगा। लाभ और उन्नति प्राप्त करने के लिए आपको अपनी अनुशासन योग्यता में कमी करनी होगी। यह रत्न स्वतंत्र व्यापार में अधिकार क्षमता बढ़ायेगा। माणिक्य रत्न की शुभता आपमें निस्वार्थ भावना का विकास करेगी।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूठी, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का

धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते हैं। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे हैं तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ

बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यों में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु सिंह राशि में स्थित है व इसका स्वामी सूर्य सप्तम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपके वात रोगों में कमी होगी। यह रत्न आपके दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाएगा। इस रत्न की शुभता से आपके अपने जीवनसाथी से स्नेह और सौहार्द के संबंध प्रगाढ़ होंगे। आपके स्वभाव में मधुरता आएगी। आप बंधुप्रिय, मधुर भाषी और स्वतंत्र व्यवसाय कार्य में सफल होंगे। इस रत्न से आपका अपने साझेदार और साथी पर विश्वास भाव मजबूत होगा। विदेश स्थानों से धन लाभ प्राप्त करना आपके लिए सहज होगा। एवं यह रत्न आपको विदेश में सम्मान दिलाएगा। आपको विदेश भ्रमण के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

हीरा

आपकी कुड़ली में शुक्र नवम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा धारण करना आपके लिए शुभ फलकारी रहेगा। हीरा रत्न धारण से आप धार्मिक, शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान व्यक्ति बनेंगे। रत्न प्रभाव से आपका धार्मिक विश्वास बढ़ेगा। पवित्र तीर्थ यात्राओं के आपको पर्याप्त अवसर मिलेंगे। हीरा रत्न आपको शुद्धचित्त, परोपकारी और गुणवान बनाएगा। हीरा रत्न दयालु, उदार, संतोषी जैसे गुणों से युक्त कर आपकी रुचि गायन, वादन और सिनेमा जैसी ललित कलाओं में आपकी सहभागिता बनाएगा। यह रत्न आपको एक अच्छा अभिनेता, काव्य नाटक पढ़ने वाले और विद्या अध्ययन में निपुण बनाएगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश का स्वामी है। शुक्र रत्न हीरा धारण कर आप अपने वैवाहिक जीवन को सुखमय बना सकते हैं। हीरा रत्न धारण करने से आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। व्यापारिक क्षेत्र में सफलता पाने के लिए आप हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। सप्तमेश का रत्न होने के कारण हीरा रत्न आपको कुटुम्ब से सुखी और विदेश स्थानों से लाभ दिला सकता है। शुक्र रत्न आपको पारिवारिक सुख के साथ धन

संचय का सुख भी दे सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम आपको असंतोषी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आपका व्यक्तिगत विकास बाधित हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर हो सकता है कि आपको जीवन के मूल उद्देश्य की प्राप्ति न हों। इसका एक कारण आपके जीवन उद्देश्यों का अत्यंत दुष्कर होना भी हो सकता है। यह रत्न धारण कर आप वकालत एवं धर्म क्षेत्र में अनुकूल आय एवं सम्मान प्राप्त नहीं कर पायें। रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर और रुखे हो सकते हैं। नियमों और सिद्धान्तों का सख्ती से पालने कराने के कारण आपका परिवार आपसे कुछ भयभीत भी रहेगा। शनि रत्न नीलम आपको कुसंगति का शिकार बना सकता है। कुटुंब से आपके संबंध प्रभावित होकर मधुरता में कमी ला सकते हैं।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। शनि आपको शुभ फल देने की स्थिति में नहीं है। अतः इस ग्रह का रत्न धारण करने पर आपकी मान, प्रतिष्ठा, कर्म, पिता, प्रभुता एवं अधिकारों का हनन हो सकता है। यह रत्न आपको व्यापार, हवन, अनुष्ठान, ऐश्वर्य भोग, कीर्तिलाभ, विदेश यात्रा, संपत्ति आदि में कष्ट दे सकता है। नीलम रत्न धारण से आपमें लोभ, स्वार्थ, गुलामी, संतान हीनता, रिश्वतखोरी एवं बेईमानी का भाव जन्म ले सकता है। चाचा, ताऊ, बुआ, बड़े भाईयों आदि विषयों के लिए शनि रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं बनी हुई है। आपके लिए यह रत्न बाधक भावेश का रत्न भी होने के कारण आपकी उन्नति में बाधक का कार्य भी करेगा।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने से आपके पेट की बीमारियां बढ़ सकती हैं। आपके द्वारा स्वयं की हानि हो सकती है। शत्रु आपकी परेशानियां बढ़ा सकते हैं। सरकार या राजा द्वारा सम्मान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। प्रशंसा की कमी का

अनुभव आपको हो सकता है। यह रत्न आपके पराक्रम, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में प्रतिकूलता ला सकता है। आभूषण और ऐश्वर्य के लिए भी रत्न का सुख सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप के अधिकतर कार्य अधूरे रह सकते हैं। आपकी चिंताओं में बढ़ोतरी होगी। तथा संतान से संबंधों की मधुरता कम हो सकती है। बड़े भाई-बहनों से संबंधों की प्रगाढ़ता भी प्रभावित हो सकती है।

केतु कुम्भ राशि में स्थित है व इसका स्वामी शनि द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको त्वचा संबंधी रोग दीर्घकाल के लिए परेशान कर सकते हैं। आपके कष्ट दूसरों के कारण बढ़ सकते हैं। रत्न प्रभाव से आप अपने शत्रुओं पर कठिनाई से विजय प्राप्त कर सकेंगे। पन्ना रत्न प्रभाव से आपकी स्मरण शक्ति कमजोर हो सकती है। शैक्षिक पक्ष से इस रत्न को धारण करने पर आपकी रुचि गुप्त विद्या और आध्यात्म के प्रति हो सकती हैं। यह रत्न आपको विलासिता के अवसर दे सकता है। आपको मस्तिष्क और नसों से संबंधित रोग या कष्ट हो सकते हैं।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते हैं। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

दशानुसार रत्न विचार

चन्द्र

(07/06/2024 - 08/06/2034)

चन्द्र की दशा में आपका मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

पुखराज, हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(08/06/2034 - 08/06/2041)

मंगल की दशा में आपका मूंगा, मोती, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

हीरा व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(08/06/2041 - 08/06/2059)

राहु की दशा में आपका गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा, मोती, हीरा, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(08/06/2059 - 08/06/2075)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, मोती, पुखराज व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

हीरा, नीलम व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(08/06/2075 - 08/06/2094)

गोमेद, पुखराज, मूंगा, मोती, हीरा, माणिक्य व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया व पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध

(08/06/2094 - 09/06/2111)

बुध की दशा में आपका मूंगा व माणिक्य रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, मोती व हीरा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और पन्ना रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Rainstar Jyotish Kendra

Nanak Dairy Road near Ashoka Garden Hodal, Palwal, Haryana

+919050633029

pankajkumar.dadieya@gmail.com

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें

बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत् सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

अष्टम भाव आयु, पुरातत्व और अन्वेषण का भाव हैं। आपकी यात्राओं में विध्न बाधाएं दे सकता हैं। अष्टम भाव से बुध धन भाव को दृष्ट करता हैं। इससे धन संग्रह में कठिनाइयाँ आती हैं। बुध की यह स्थिति आपके छोटे भाई बहन को पिताधिक्य, तेज बुखार और दुर्बल देह का कारण बन सकती हैं। बुध की स्थिति अष्टम भाव में आपको बुद्धिबल से धन संग्रह की योग्यता दे रही है।

आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहना पड़ सकता है, पिता से शत्रुता, तंत्र-मंत्र ज्योतिष में रुचि, शत्रुनाशक, दीर्घरोगी, भाइयों व मित्रों से मतभेद, आर्थिक विपन्नता की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 3, 4, 5, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में मंगल के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

